

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पू. आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

२९

संथारगं-छट्टुं पड्णयं

मुनि दीपरत्नसागर

Date : / / 2012

Jain Aagam Online Series-29

२९**गंथाणुक्कमो**

कमंको	विसय	सुतं	गाहा	अणुक्कमो	पिट्ठंको
१	मंगलं-संथारगस्सगुणा	-	१-३०	१-३०	२
२	संथारगं सरूवं,लाभं	-	३१-५५	३१-५५	३
३	संथारग-उदाहरणाइं	-	५६-८८	५६-८८	५
४	भावणा	-	८९-१३३	८९-१३३	७

२९ संथारगं – छट्ठं पइण्णयं

- [१] काऊण नमुक्कारं जिनवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संथारम्मि निबद्धं गुणपरिवाडिं निसामेह ॥
- [२] एस किराऽऽराहणया एस किर मनोरहो सुविहियाणं ।
एस किर पच्छिमंते पडागाहरणं सुविहियाणं ॥
- [३] भूर्इगहणं जह नक्कयाण अवमानयं अवज्झाणं ।
मल्लाणं च पडागा तह संथारो सुविहियाणं ॥
- [४] पुरिसवरपुंडरीओ अरिहा इव सव्वपुरिससीहाणं ।
महिलाण भगवईओ जिनजननीओ जयंमि जहा ॥
- [५] वेरुलिउच्च मणीणं गोसीसं चंदनं व गंधाणं ।
जह व रयणेसु वइरं तह संथारो सुविहिआणं ॥
- [६] वंसाणं जिनवंसो सव्वकुलाणं च सावयकुलाइं ।
सिद्धिगई य गईणं मुत्तिसुहं सव्वसुक्खाणं ॥
- [७] धम्माणं च अहिंसा जनवयवयणाण साहुवयणाइं ।
जिनवयणं च सूईणं सुद्धीणं दंसणं च जहा ॥
- [८] कल्लाणं अब्भुदओ देवाणं दुल्लहं तिहुयणंमि ।
बत्तीसं देविंदा जं तं झायंति एगमना ॥
- [९] लद्धं तु तए एयं पंडियमरणं तुं जिनवरक्खायं ।
हंतूण कम्ममल्लं सिद्धिपडागा तुमे लद्धा ॥
- [१०] झाणाणं परमसुक्कं नाणाणं केवलं जहा नाणं ।
परिनिव्वाणं च जहा कमेण भणिअं जिनवरेहिं ॥
- [११] सव्वुत्तम-लाभाणं सामन्नं चेव लाभ मन्नंति ।
परमुत्तम तित्थयरो परमगई परमसिद्धिति ॥
- [१२] मूलं तह संजमो वा परलोगरयाण किलिट्ठकम्माणं ।
सव्वुत्तमं पहाणं सामन्नं चेव मन्नंति ॥
- [१३] लेसाण सुक्कलेसा नियमाणं बंभचेरवासो अ ।
गुत्ति-समिई गुणाणं मूलं तह संजमोवाओ ॥
- [१४] सव्वुत्तमतित्थाणं तित्थयरपयासियं जहा तित्थं ।
अभिसेउ व्व सुराणं तह संथारो सुविहियाणं ॥
- [१५] सियकमल-कलस-सत्थिय नंदावत्त-वरमल्लदामाणं ।
तेसिंपि मंगलाणं संथारो मंगलं पढमं ॥

- [१६] तवअग्गि नियमसूरा जिनवरनाणा विसुद्धपत्थयणा ।
जे निव्वहंति पुरिसा संथारगइंदमारूढा ॥
- [१७] परमट्ठो परमउलं परमाययणं ति परमकप्पु ति ।
परमुत्तम तित्थयरो परमगई परमसिद्धि ति ॥
- [१८] ता एयं तुमि लद्धं जिनवयणामयविभूसियं देहं ।
धम्मरयणस्सिया ते पडिया भवणंमि वसुहारा ॥
- [१९] पत्ता उत्तमपुरिसा कल्लाणपरंपरा परमदिव्वा ।
पावयण साहु धीरं कयं च ते अज्ज सप्पुरिसा ! ॥
- [२०] सम्मत-नाण-दंसण वररयणा नाणतेयसंजुता ।
चारित्तसुद्धसीला तिरयणमाला तुमे लद्धा ॥
- [२१] सुविहियगुणवित्थारं संथारं जे लहंति सप्पुरिसा ।
तेसिं जियलोगसारं रयणाहरणं कयं होइ ॥
- [२२] जं तित्थं तुमि लद्धं जं पवरं सव्वजीवलोगंमि ।
ण्हाया जत्थ मुनिवरा निव्वाणमनुत्तरं पत्ता ॥
- [२३] आसव संवर निज्जर तिन्नि वि अत्था समाहिया जत्थ ।
तं तित्थं ति भणंती सीलव्वयबद्धसोवाणा ॥
- [२४] भंजिय परीसहचमूं उत्तमसंजमबलेण संजुता ।
भुंजंति कम्मरहिआ निव्वाणमनुत्तरं रज्जं ॥
- [२५] तिहुअणरज्जसमाहिं पत्तोऽसि तुमं हि समयकप्पंमि ।
रज्जाभिसेयमउलं विउलफलं लोइ विहरंति ॥
- [२६] अभिनंदइ मे हिययं तुब्भे मुखस्स साहणोवाओ ।
जं लद्धो संथारो सुविहिअ ! परमत्थ नित्थारो ॥
- [२७] देवा वि देवलोए भुंजंता बहुविहाइं भोगाइं ।
संथारं चिंतंता आसन-सयणाइं मुंचंति ॥
- [२८] चंदो व्व पिच्छणिज्जो सूरु इव तेयसा उदिप्पंतो ।
धनवंतो गुणवंतो हिमवंत-मंहत-विक्खाओ ॥
- [२९] गुत्ती-समिइ-उवेओ संजम-तव-नियम-जोग-जुत्तमणो ।
समणो समाहियमनो दंसणनाणे अनन्नमनो ॥
- [३०] मेरु व्व पव्वयाणं सयंभुरमणु व्व चेव उदहीणं ।
चंदो इव ताराणं तह संथारो सुविहियाणं ॥
- [३१] भण केरिसस्स भणिओ संथारो केरिसे व अवगासे ।
उक्खंपिगस्स करणं एवं ता इच्छिमो नाउं ॥
- [३२] हायंति जस्स जोगा जरा अ विविहा य हुंति आयंका ।
आरूहइ अ संथारं सुविसुद्धो तस्स संथारो ॥

- [३३] जो गारवेण मतो नेच्छइ आलोयणं गुरुसगासे ।
आरूहइ य संथारं अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [३४] जो पुण पत्तब्भूओ करेइ आलोअणं गुरुसगासे ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [३५] जो पुण दंसणमइलो सिढिलचरित्तो करेइ सामन्नं ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [३६] जो पुण दंसणसुद्धो आयचरित्तो करेइ सामन्नं ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [३७] जो रागदोसरहिओ तिगुत्तिगुतो तिसल्लमयरहिओ ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [३८] तिहिं गारवेहिं रहिओ तिंदडपडिमोयगो पहियकित्ती ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [३९] चउविहकसायमहणो चउहिं विकहाहिं विरहिओ निच्चं ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [४०] पंचमहव्वयकलिओ पंचसु समिईसु सुट्ठं आउत्तो ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [४१] छक्काया पडिविरओ सत्तभयट्ठाणविरहिअ मईओ ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [४२] अट्ठमयट्ठाण जढो कम्मट्ठविहस्स खवणहेउ ति ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [४३] नवबंभचेरगुत्तो उज्जुत्तो दसविहे समणधम्मे ।
आरूहइ य संथारे अविमुद्धो तस्स संथारो ॥
- [४४] जुत्तस्स उत्तमट्ठे मलियकसायस्स निच्चियारस्स ।
भण केरिसो उ लाभो संथारगयस्स समणस्स ? ॥
- [४५] जुत्तस्स उत्तमट्ठे मलियकसायस्स निच्चियारस्स ।
भण केरिसं च सुक्खं संथारगयस्स खमगस्स ? ॥
- [४६] पढमिल्लुगंमि दिवसे संथारगयस्स जो हवइ लाभो ।
को दाणि तस्स सक्को अग्घं काउं अनग्घस्स ॥
- [४७] जो संखिज्जभवट्ठिई सव्वंपि खवेइ सो तहिं कम्मं ।
अनुसमयं साहुपयं साहू वुत्तो तहिं समए ॥
- [४८] तणसंथारनिसन्नोऽवि मुनिवरो भट्ठारागमयमोहो ।
जं पावइ मुत्तिसुहं कत्तो तं चक्कवट्ठी वि ? ॥
- [४९] तप्पुरिसनाडयंमि वि न सा रई तह सहत्थ वित्थारे ।
जिनवयणंमि वि सा ते हेउसहस्सोवगूढंमि ॥

- [५०] जं राग-दोसमइअं सुक्खं जं होइ विसयमईयं च ।
अनुहवइ चक्कवट्ठी न होइ तं वीयरागस्स ॥
- [५१] मा होउ वासगणया न तत्थ वासाणि परिगणिज्जंति ।
बहवे गच्छं वुत्था जम्मण-मरणं च ते खुत्ता ॥
- [५२] पच्छा वि ते पयाया खिप्पं काहिति अप्पणो पत्थं ।
जे पच्छिमंमि काले मरंति संथारमारूढा ॥
- [५३] न वि कारणं तणमओ संथारो न वि य फासुया भूमी ।
अप्पा खलु संथारो हवइ विसुद्धे चरित्तंमि ॥
- [५४] निच्चं पि तस्स भावुज्जुयस्स जत्थ व जहिं व संथारो ।
जो होइ अहक्खाओ विहारमब्भुट्ठिओ लूहो ॥
- [५५] वासारत्तंमि तवं चित्तविचिताइ सुट्ठु कारुणं ।
हेमंते संथारं आरूहइ सव्वसवत्थासु ॥
- [५६] आसीय पोयणपुरे अज्जा नामेण पुप्फचूल ति ।
तीसे धम्मायरिओ पविस्सुओ अण्णिआउत्तो ॥
- [५७] सो गंगमुत्तरंतो सहसा उस्सारिओ य नावाए ।
पडिवन्न उत्तिमट्ठं तेण वि आराहिअं मरणं ॥
- [५८] पंचमहव्वयकलिया पंचसया अज्जया सुपुरिसाणं ।
नयरंमि कुंभकारे कडगंमि निवेसिआ तइया ॥
- [५९] पंचसया एगूणा वायंमि पराजिएण रूट्ठेणं ।
जंतंमि पावमइणा छुन्ना छन्नेण कम्मेण ॥
- [६०] निम्मम-निरहंकारा निययसरीरे वि अपडिबद्धा उ ।
ते वि तह छुज्जमाणा पडिवन्ना उत्तमं अट्ठं ॥
- [६१] दंडो ति विस्सुयजसो पडिमादसधारओ ठिओ पडिमं ।
जउणावंके नयरे सरेहिं विद्धो सयंगीओ ॥
- [६२] जिनवयणनिच्छियमई निययसरीरेऽवि अपडिबद्धो उ ।
सोऽवि तह विज्जमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [६३] आसी सुकोसलरिसी चाउम्मासस्स पारणा-दिवसे ।
ओरूहमाणो य नगा खइओ मायाइ वग्घीए ॥
- [६४] धीधणियबद्धकच्छो पच्चक्खाणम्मि सुट्ठु उवउत्तो ।
सो तहवि खज्जमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [६५] उज्जेनीनयरीए अवंति नामेण विस्सुओ आसी ।
पाओवगमनिवन्नो सुसाणमज्झम्मि एगंते ॥
- [६६] तिन्नि रयणीओ खइओ भल्लुंकी रुट्ठिया विकइढंती ।
सो वि तह खज्जमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥

- [६७] जल्ल-मल-पंकधारी आहारो सील-संजमगुणाणं ।
अज्जीरणो य गीओ कतिय अज्जो सुरवणंमि ॥
- [६८] रोहीडगंमि नयरे आहारं फासुयं गवेसंतो ।
कोवेण खत्तिएण य भिन्नो सत्तिप्पहारेणं ॥
- [६९] एगंतमनावाए विच्छिन्ने थंडिले चइय देहं ।
सोऽवि तह भिन्नदेहो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [७०] पाडलिपुत्तंमि पुरे चंदयगुत्तस्स चेव आसीय ।
नामेणं धम्मसीहो चंदसिरिं सो पयहिऊणं ॥
- [७१] कोल्लयरंमि पुरवरे अह सो अब्भुट्ठिओ ठिओ धम्मो ।
कासीय गिद्धपट्ठं पच्चक्खाणं विगयसोगो ॥
- [७२] अह सो वि चत्तदेहो तिरियसहस्सेहिं खज्जमाणो य ।
सोऽवि तह खज्जमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [७३] पाडलिपुत्तंमि पुरे चाणक्को नाम विस्सुओ आसी ।
सव्वारंभ-नियतो इंगिणि-मरणं अह निवन्नो ॥
- [७४] अनुलोमपूअणाए अह से सत्तू जओ डहइ देहं ।
सो तहवि इज्जमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [७५] गुट्ठ य पाओवगओ सुबंधुणा गोमये पलिवियंमि ।
डज्जंतो चाणक्को पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [७६] कायंदीनयरीए राया नामेण अमयघोसो ति ।
तो सो सुयस्स रज्जं दाऊणं इह चरे धम्मं ॥
- [७७] आहिंडिऊण वसुहं सुत्तऽत्थविसारओ सुयरहस्सो ।
कायंदिं चेव पुरिं अह पत्तो विगयसोगो सो ॥
- [७८] नामेण चंडवेगो अह से पडिछिंदइ तयं देहं ।
सो तह वि छिज्जमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [७९] कोसंबीनयरीए ललिअ घडा नाम विस्सुआ आसि ।
पाओवगम निवन्ना बत्तीसं ते सुअरहस्सा ॥
- [८०] जलमज्झे ओगाढा नईइ पूरेण निम्ममसरीरा ।
तहवि हु जलदहमज्झे पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [८१] आसी कुणालनयरे राया नामेण वेसमणदासो ।
तस्स अमच्चो रिट्ठो मिच्छदिट्ठी पडिनिविट्ठो ॥
- [८२] तत्थ य मुनिवरवसहो गणिपिडगधरो तहाऽऽसि आयरिओ ।
नामेण उसहसेनो सुयसायर-पारगो धीरो ॥
- [८३] तस्सासी अ गणहरो नानासत्थत्थगहियपेआलो ।
नामेण सीहसेनो वायंमि पराजिओ रुट्ठो ॥

- [८४] अह सो निरानुकंपो अग्गिं दाऊण सुविहिय पसंते ।
सो तह वि डज्झमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [८५] कुरुदत्तोऽवि कुमारो सिंबलिफालि व्व अग्गिणा दड्ढो ।
सो तह वि डज्झमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [८६] आसी चिलाइपुत्तो मुइंगुलियाहिं चालणि व्व कओ ।
सो तह वि खज्जमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [८७] आसी गयसुकुमालो अल्लयचम्मं व कीलयसएहिं ।
धरणीयत्ते उट्ठिद्धो तेण वि आराहिअं मरणं ॥
- [८८] मंखलिणा वि य अरहओ सीसा तेअस्स उवगया दड्ढा ।
ते तह वि डज्झमाणो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [८९] परिजाणइ तिगुत्तो जावज्जीवाइ सव्वमाहारं ।
संघ-समवाय-मज्झे सागारं गुरु-निओगेणं ॥
- [९०] अहवा समाहिहेठं करेइ सो पानगस्स आहारं ।
तो पानगं पि पच्छा वोसिरइ मुनी जहाकालं ॥
- [९१] खामेमि सव्वसंघं संवेगं सेसगाण कुणमाणो ।
मन-वइ-जोगेहिं पुरा कय-कारिअ-अनुमए वा वि ॥
- [९२] सव्वे अवराहपए एस खमावेमि अज्ज निस्सल्लो ।
अम्मापिऊसरिसया सव्वेऽवि खमंतु मह जीवा ॥
- [९३] धीरपुरिस पन्नतं सप्पुरिस निसेवियं परमघोरं ।
धन्ना सिलायलगया साहंती उत्तमं अट्ठं ॥
- [९४] नारय तिरियगइए मनुस्स देवत्तणे वसंतेणं ।
जं पत्तं सुह-दुक्खं तं अनुचिंते अनन्नमनो ॥
- [९५] नरएसु वेयणाओ अनोवमाओ असायबहुलाओ ।
कायनिमित्तं पत्तो अनंतखुत्तो बहुविहाओ ॥
- [९६] देवत्ते मनुयत्ते पराभिओगतणं उवगएणं ।
दुक्खपरिकिलेसकरी अनंतखुत्तो समनुभूओ ॥
- [९७] तिरियगइं अनुपत्तो भीममहावेअणा अनोरपारा ।
जम्मण-मरणऽरहट्टे अनंतखुत्तो परिब्भमिओ ॥
- [९८] सुविहिय ! अईयकालं अनंतकालं तु आगयगएणं ।
जम्मण-मरणमनंतं अनंतखुत्तो समनुभूओ ॥
- [९९] नत्थि भयं मरणसमं जम्मणसरिसं न विज्जए दुक्खं ।
जम्मण-मरणायंकं छिंद ममतं सरीराओ ॥
- [१००] अन्नं इमं सरीरं अन्नो जीवो ति निच्छयमईओ ।
दुक्ख परिकिलेसकरं छिंद ममतं सरीराओ ॥

- [१०१] तम्हा सरीरमाइं सब्भितर बाहिरं निरवसेसं ।
छिंद ममतं सुविहिय ! जइ इच्छसि उत्तमं अट्ठं ॥
- [१०२] जगआहारो संघो सव्वो मह खमउ निरवसेसंपि ।
अहमवि खमामि सुद्धो गुणसंघायस्स संघस्स ॥
- [१०३] आयरिय उवज्झाए सीसे साहम्मिए कुलगणे य ।
जे मे केइ कसाया सव्वे तिविहेण खामेमि ॥
- [१०३-R] सव्वस्स समणसंघस्स भगवओ अंजलिं करिय सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता अहम वि खामेमि सव्वस्स ॥
- [१०४] सव्वस्स जीवरासिस्स भावओ धम्मनिहिय नियचित्तो ।
सव्वं खमावइत्ता अहयं पि खमामि सव्वेसिं ॥
- [१०५] इय खामियाइयारो अनुतरं तवसमाहिमारूढो ।
पप्फोडंतो विहरइ बहुविह बाहाकरं कम्मं ॥
- [१०६] जं बद्धमसंखिज्जाहिं असुभ भवसयसहस्सकोडीहिं ।
एगसमएण विहुणइ संथारं आरुहंतो य ॥
- [१०७] इह तह विहारिणो से विग्घकरी वेयणा समुट्ठेइ ।
तीसे विज्झवणाए अनुसट्ठिं दिंति निज्जवया ॥
- [१०८] जइ ताव ते मुनिवरा आरोवियवित्थरा अपरिकम्मा ।
गिरि-पब्भार-विलग्गा बहु-सावय-संकडं भीमं ॥
- [१०९] धीधणियबद्धकच्छा अनुतरविहारिणो समक्खाया ।
सावयदाढगयाविहु साहंती उत्तमं अट्ठं ॥
- [११०] किं पुन अनगारसहायगेहिं धीरेहिं संगयमणेहिं ।
न हु नित्थरिज्जइ इमो संथारो उत्तमं अट्ठं ॥
- [१११] उच्छूढ सरीरधरा अन्नो जीवो सरीर-मन्नंति ।
धम्मस्स कारणे सुविहिया सरीरंपि छड्ढंति ॥
- [११२] पोराणिया पच्चुप्पन्निया उ अहियासिरुण वियणाओ ।
कम्मकलंकलवल्लीं विहुणइ संथारमारूढो ॥
- [११३] जं अन्नाणी कम्मं खवेइ बहुयाहिं वासकोडीहिं ।
तं नाणी तिहिं गुत्तो खवेइ ऊसासमितेणं ॥
- [११४] अट्ठविहकम्ममूलं बहुएहिं भवेहिं संचियं पावं ।
तं नाणी तिहीं गुत्तो खवेइ ऊसासमितेणं ॥
- [११५] एवं मरिरुण धीरा संथारंमि उ गुरु पसत्थंमि ।
तइअ भवेण व तेण व सिज्झिज्जा खीणकम्मरया ॥
- [११६] गुत्ती-समिइ-गुणइढो संजम-तव-नियम-करण-कयमउडो ।
सम्मत्त-नाण-दंसण तिरयण-संपाविअ महग्घो ॥

- [११७] संघो सइंदयाणं सदेव-मणुआ-सुरम्मि लोगम्मि ।
दुल्लहत्तरो विसुद्धो तो सुविसुद्धो महामउडो ॥
- [११८] डज्झंतेण वि गिम्हे कावसिलाए कवल्लिभूयाए ।
सूरेण व चंदेण व किरणसहस्सं पयंडेण ॥
- [११९] लोग-विजयं करित्तेण तेन झाणोवउत्त-चित्तेणं ।
परिसुद्ध-नाण-दंसण विभूइ-मंतेण चित्तेणं ॥
- [१२०] चंदगविज्झं लद्धं केवलसरिसं समाउ परिहीणं ।
उत्तमत्तेसानुगओ पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [१२१] एवं मए अभिथुआ संथारग-इंदखंध-मारूढा ।
सुसमण-नरिंद-चंदा सुह-संकमणं सया दित्तु ॥

मुनि दीपरत्तसागरेण संशोधितः सम्पादितश्च “संथारगं पइण्णयं सम्मत्तं”

२९

“संथारगं – छट्ठं पइण्णयं” सम्मत्तं